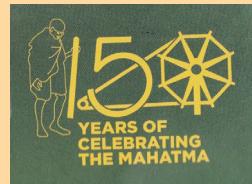


भाषा शिक्षा विभाग  
Department of Education in Languages



दृश्यांकन

# भाषा sangam

a visualscape

अंक-३



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
National Council of Educational Research and Training

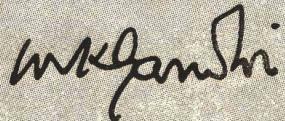


## Gandhiji's Talisman

I will give you a talisman. Whenever you are in doubt or when the self becomes too much with you, apply the following test:

Recall the face of the poorest and the weakest man whom you may have seen and ask yourself if the step you contemplate is going to be of any use to him. Will he gain anything by it? Will it restore him to a control over his own life and destiny? In other words, will it lead to Swaraj for the hungry and spiritually starving millions?

Then you will find your doubts and your self melting away.



# निदेशक की कलम से...

This is yet another opportunity to give you भाषा sangam-a **visualscape**. This is a print cum online magazine of Department of Education in Languages. The magazine showcases programmes and projects of the department and perspectives in the area of language and literature.

This issue is a special edition as it serves as a memoir of Mahatma Gandhi on his hundred and fiftieth anniversary. The stories, visuals and reminiscences from our history are revived in the magazine to pay tribute to Gandhi ji.

I extend my heartfelt greetings to the members of faculty, Department of Education in Languages for their endeavours. I am sure readers will enjoy going through this magazine.

Hrushikesh Senapaty

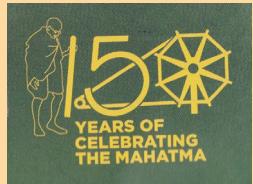
Director

National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg

New Delhi- 110 016

01.09.2019



भारत में धनी और अभिजात वर्ग शारीरिक श्रम से घृणा करता है। ऐसी मानसिकता ठीक नहीं है। श्रम की गरिमा स्थापित करना आवश्यक है। सही अर्थों में बौद्धिक विकास के लिए भी शारीरिक श्रम अनिवार्य है।

-गांधीजी

# संपादक की कलम से...

## लौट आओ गांधी

आज पूरा देश महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में धरती पर दुनिया के इस अद्भुत व्यक्ति को याद करते हुए फिर-फिर समझने की कोशिश कर रहा है। भाषा Sangam के इस तीसरे अंक पर काम करते हुए हमारे मन में एक सवाल था कि एनसीईआरटी अपनी स्थापना के साथ ही गांधी के जिस ‘जंतर’\* को लेकर चल रही है, क्या वह अनायास है? यदि नहीं, तो लगभग साठ वर्षों की अपनी यात्रा में परिषद कैसे और किन अर्थों में गांधी के सपनों के भारत को निर्मित करने में सहायक रही है, इसकी पड़ताल ज़रूरी है। यह समझने के लिए यह जानना-समझना भी उतना ही ज़रूरी है कि हम कहाँ-कहाँ, कब-कब और कैसे-कैसे गांधी को याद करते हुए अपनी सामग्री में शामिल करते रहे हैं।

इस कार्य के दौरान हमने एनसीईआरटी के अलग-अलग तरह के कार्यों को खंगाला, उससे रुबरु हुए हमने देखा कि एनसीईआरटी की स्थापना के बाद से यह करिशमाई व्यक्तित्व, गांधी किसी न किसी रूप में हमारी उँगली पकड़े खड़ा है। कभी कवि, साहित्यकार, शब्द साधक की तरह तो कभी संगीतकार, चित्रकार, मूर्तिकार की तरह कभी इतिहास निर्माता और स्वतंत्रता की मशाल और शांतिदूत की तरह तो कभी समाज वैज्ञानिक तो कभी वैज्ञानिक, श्रमिक या वैद्य की तरह। कभी-कभी तो एक मामूली आदमी की तरह। यह भी लगा कि उनका यह ‘मामूली आदमी’ उनके सभी रूपों के केंद्र में है, जो दरअसल वे ‘स्वयं’ हैं अपने समूची जीवनी शक्ति के साथ।

इस यात्रा में एनसीईआरटी की स्थापना के बाद निर्मित सभी तरह की सामग्री को देखने का प्रयास रहा। यहाँ पर पुस्तकें, ऑडियो-वीडियो सामग्री, व्याख्यान, संगोष्ठियों चर्चाओं की कुछ झलकियों को उनके संदर्भों के साथ रखने का प्रयास हुआ है। पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए हमारी कुछ सीमा भी रही- (जाहिर है समयाभाव की सीमा इसका मुख्य कारण रही) कि हम सन् 2005 के बाद तैयार पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित रहे। लेकिन इसे विस्तृत फलक देने में चारों भाषाओं (हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत) की पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ समाज-विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों को टोलने का प्रयास किया गया। हमने पाया कि इन सभी तरह की सामग्री में संभलकर कदम उठाने की चेतावनी के साथ एक शिक्षक और मार्गदर्शक की तरह ‘जंतर’ लिए गांधी हमेशा खड़े हैं।

साधियो, एनसीईआरटी के 59वें स्थापना दिवस पर ‘भाषा Sangam’ के इस तीसरे अंक को आपके हाथों में देते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है पर भाषा की विद्यार्थी होने के कारण मेरे मन में फिर एक सवाल है कि क्या हम अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों को यह विश्वास दिला पाएंगे कि ‘ताकतवर’ शब्द का अर्थ कोई ‘बाहुबली’ या कोई ‘अर्थबली’ या कोई ‘शस्त्रबली’ या फिर कोई ‘ज्ञानबली’ नहीं होता बल्कि ‘आत्मबली’ होता है। जो इस करिश्यमाई गांधी नाम के ‘मामूली आदमी’ में था और जो हर मामूली आदमी के पास हो सकता है।

ओ! ‘मामूली आदमी’ लौट आओ कि बहुत से मामूली लोगों का देश तुम्हें पुकार रहा है। फिर आओ कि साधारण के असाधारणत्व की पहचान अभी बाकी है।

पिछले कुछ समय से साल में भाषा Sangam के दो अंक निकालने का निश्चय किया और दो अंक निकल भी चुके हैं। बहुत सायास नहीं पर इसकी एक तिथि 1 सितंबर (स्थापना दिवस) और दूसरी तिथि 21 फरवरी (अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस) रहती है। इस बार इस तीसरे अंक को तैयार करने से पहले मन में एक विचार आया कि यह गांधीजी की 150वीं जयंती है और 01 सितंबर को एनसीईआरटी के स्थापना दिवस पर निकाला जा रहा है, तो क्यों न इसे एनसीईआरटी में महात्मा गांधी के रूपों पर केंद्रित करें। पर यह विचार कभी इस रूप में न परिणत होता अगर हमारे विभाग के साथी तुरंत स्वीकृति देते हुए काम में न लग जाते।

हम इस तीसरे अंक के अकादमिक, शोध और संपादन संबंधी कार्यों के लिए विभाग के साथियों जो इस सृजनात्मक शोध कार्य में सहयोगी रहे- प्रो. फारुक अंसारी, नरेश कोहली, डॉ. मीनाक्षी खार, डॉ. चमन आरा खान, डॉ. जतीन्द्र मोहन मिश्रा के बहुत आभारी है। इनके इस कार्य में सहयोगी शिखा पटवा, रवि रंजन कुमार, नीलकंठ पान, श्रिया बंदोपाध्याय, राबिया नाज़, अमित, गुरिन्द्र कौर, मो. अरिफ, अनिल कुमार यादव को धन्यवाद, प्यार और शुभकामनाएँ।

पहलकदमी के साथ इस पत्रिका को संपादित, सुसज्जित और सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए अपनी सहयोगी डॉ. मीनाक्षी खार का एक बार फिर से विशेष शुक्रिया। इसमें उनका साथ देने में रेखा की तकनीकी समझ के साथ-साथ अकादमिक समझ भी मिलती रही और अनिता (डीटीपी ऑपरेटर) को कैसे भूल सकते हैं। भाषा शिक्षा विभाग देवाशीष कुमार जायसवाल (system analyst), सीआईईटी का भी आभारी है।

साथियों आइए! सब साथ मिलकर गांधीजी के भारत में कुछ नए कदम उठाएँ। सहयोग और सुझाव के साथ मिलते और लिखते रहें।

संध्या सिंह  
विभागाध्यक्ष  
भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी,  
श्री अरविंद मार्ग,  
नई दिल्ली-110 016  
website: [www.ncert.nic.in](http://www.ncert.nic.in)  
दिनांक: 01.09.2019

\*

### गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें सदेह हो या  
तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह  
कसौटी आज्ञामाओ :

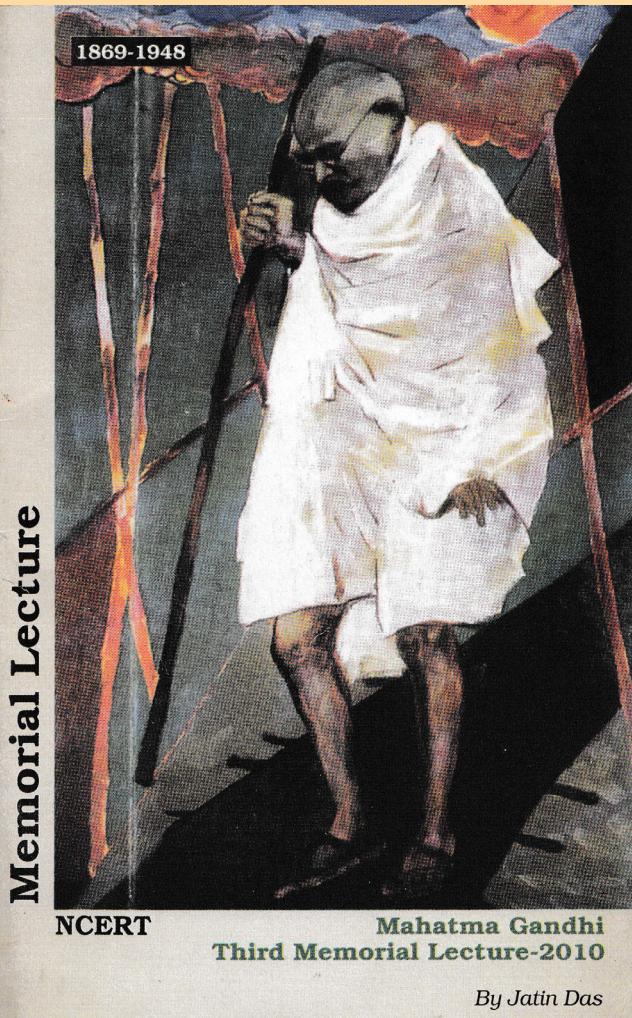
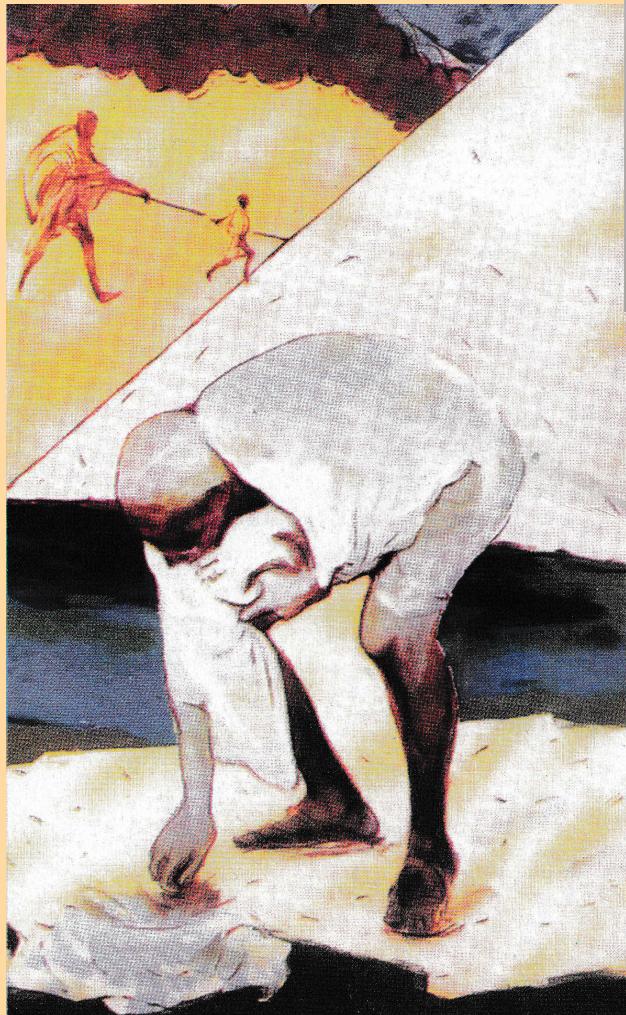
जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने  
देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने  
दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार  
कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना  
उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ  
पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और  
भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे  
उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा,  
जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है  
और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

वैश्णव जन तो तेने कहिये जे  
पीड़ परायी जाणे रे

पर-दुख्खे उपकार करे तोये  
मन अभिमान ना आणे रे

वैश्णव जन तो तेने कहिये जे ...



सकल लोक मान सहुने वंदे  
नींदा न करे केनी रे

वाच काछ मन निश्वल राखे  
धन-धन जननी तेनी रे

वैश्णव जन तो तेने कहिये जे ...

# Inside...

1. Bhasha Sangam
2. एक पहचान
3. पत्ताचार
4. Gandhi in Literature-An inspiration
5. भव्य सत्याग्रहाश्रमः
6. Gandhi in Snapshots
7. गांधीजी आज भी
8. CIET, NCERT- Audio-Video Programme
9. Yester Years
10. रुबरू
11. Posts
12. India's Pluralism is marked by her linguistic diversity

वे ही अनुभव हमें सर्वाधिक समृद्ध करते हैं तथा विकास में योगदान देते हैं जो अपनी जमीन से जुड़े हुए होते हैं।

-गांधीजी

# Our Focus in 2018-2019- A Snapshot

## *Development of Workbooks in English for class IX*

The workbook in English Words and Expressions is developed for class IX. The workbook is contextualized and aligned to the textbook Beehive for class IX to strengthen the skills in language. The texts are taken from the authentic sources hence learner's engagement with the texts will enhance their critical thinking.

## *Development of Workbook in Sanskrit for Class IX*

The department has developed workbook in Sanskrit for learners in class IX,. The workbook titled Samagya Abhyas will enhance the language proficiency of the learners. The exercises on language skills and grammar will familiarize learners with linguistic features of Sanskrit language.

## **Dictionary of Urdu for schools (Trilingual)**

This dictionary has been developed for the effective teaching of Urdu at upper primary and secondary stages. Pedagogical approach has been adopted in developing the trilingual dictionary so that the use of selected words may be understood in the context.

## *Vidyaarthi Hindi Santhali Shabdkosh*

Vidyaarthi Hindi Santhali Shabdkosh has been developed for the learners who have Santhali as their mother tongue. The dictionary will be useful in Hindi language learning for Santhali medium learners in school. This will also promote multilingualism as a strategy for learning.

## *A study of Urdu Language teaching and learning processes of JNV teachers*

The study was undertaken with the purpose of close observation of classroom teaching-learning processes of Urdu language teaching of JNV teachers to ascertain the areas of improvement in the process of Urdu language teaching and learning and analysis of factors that support Urdu as a second language in schools.

## *Development of e-content and Quick Response code (QR code)*

The programmes for developing e-content and QR code have been taken up in Hindi English Urdu and Sanskrit. The objective has been to provide relevant additional resources to the learners and teachers as well; and to give learners hands on experience of digital resources. The audio/video is developed on different genres of literature for honing skills of language. Language textbooks have been provided QR code to access the developed material.

## *Development of Learning Outcomes for Secondary Stage*

Learning outcomes in all the four languages Hindi, English, Urdu and Sanskrit are developed to facilitate the teaching learning process for secondary stage in continuation of Learning Outcomes of Elementary stage. The objective has been to outline the process and goals of learning

### *Training Programmes*

S. No.	Title of the programme	Venue and Dates	No. of participants
1.	Ten-day Professional development programme for English language teachers at upper primary and secondary stage (SCP-PAC-2.29 (2018-19))	NIE, NCERT, New Delhi 3-12 Jan. 2019	43
2.	Capacity building of Master Trainers in Urdu language teaching at the Upper Primary and Secondary Stages (L2).	4-13 March, 2019 Bombay	35

### *Celebration of Munshi Premchand's birth anniversary on 31st July 2018.*

Lecture by Prof. Vishwanath Tripathi, on the life and intellect of Premchand and enactment of the stories by Premchand.

**SAMVAAD Lecture Series-II: Lecture on Bharatvanshi Bhasha Evam Sanskriti** by Professor Pushpita Awasthi, Director, Hindi Foundation, Netherlands.

**Celebration of Mother Tongue Day on February 21, 2019** a lecture on Whither Shall we Wander? by Professor Uday Narain Singh, Former Director, Central Institute of Indian Languages This was followed by storytelling in Urdu-Dastangoi.



*Whither Shall we Wander?*



*Dastangoi*

**Lecture in memory of and tribute to well-known critic, writer and thinker Professor Namwar Singh** by Professor Purusotham Agarwal, noted Hindi Critic & Chief Adviser of Hindi Language Textbooks of NCERT.

## *Two-day National Seminar on Integration among Indian Languages*

Two-day National Seminar on Integration among Indian Languages has been organised from 6-7 February, 2019 for the development of compendium of multilingual pedagogy.



### **Department of Education in Languages**

#### **Mother Tongue Based Multilingualism**

- \* Mother tongue based multilingualism envisages promoting the use of languages of learners in school to teach-learn content subjects and processes of schooling.
- \* Learners begin their schooling in their mother tongue and move on to add at least two more languages by the time they complete their ten-year schooling.
- \* Children become multilinguals, use the languages available in the classroom as a resource.
- \* Language-in-education policy, the Three Language Formula advocates mother tongue based multilingualism.

#### **National Curriculum Framework – 2005 recommends**

- \* Language teaching needs to be multilingual not only in terms of the number of languages offered to children but also in terms of evolving strategies that would use the multilingual classroom as a resource.
- \* Home language(s) of children should be the medium of learning in schools.
- \* If a school does not have provisions for teaching in the child's home language(s) at the higher levels, primary school education must still be covered through the home language(s). It is imperative that we honour the child's home language(s). According to Article 350A of our Constitution, 'it shall be the endeavour of every State and of every local authority within the State to provide adequate facilities for instruction in the mother-tongue at the primary stage of education to children belonging to linguistic minority groups'.
- \* Children will receive multilingual education from the outset. The three-language

Department of Education in Languages NCERT promotes mother tongue based multilingualism through

- « development of trilingual dictionaries, translation of all textbooks and supplementary materials into Hindi, Urdu, Sanskrit and so on;
- « adopting language across curriculum (LAC) perspective as a strategy for classroom teaching-learning;
- « professional development courses which address the concern through tasks, materials and processes;
- « the contents of textbooks and supplementary readers to give opportunities for promoting multilingualism; and
- « advocating multilingualism recognises language of all children thereby instilling confidence and bootoing their self esteem.



राष्ट्रीय शिक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



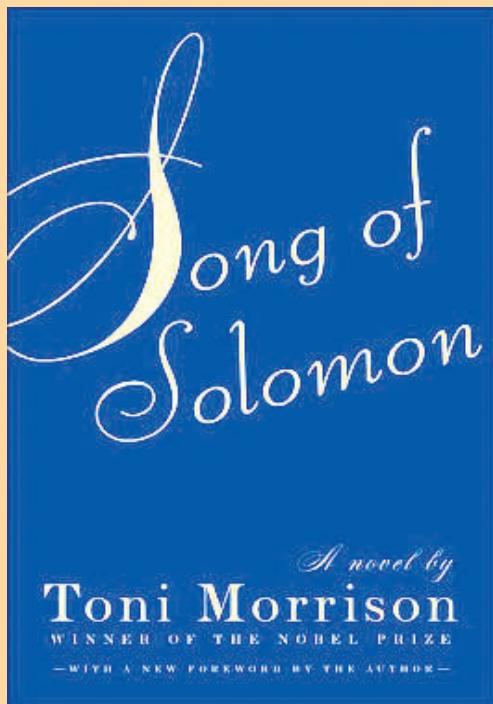
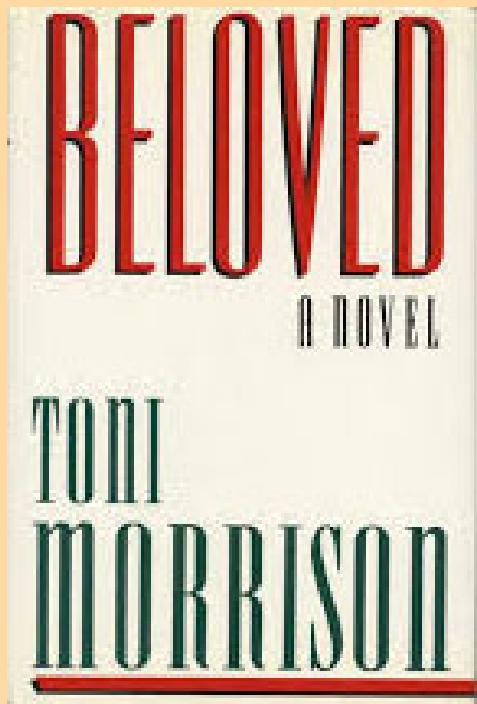
# Paying Tribute...

Toni Morrison Noble Laureate(1993) and a dearly loved literary figure who justified her existence when she said-We die, that may be the meaning of our life, but we do language that may be the measure of our lives.

Toni Morrison wrote extensively touching the hearts of millions. She faced the realities of being single parent who shuttled between household chores and writing her novels. There is always space for genuine reflection when she wrote about the struggle of black people for identity and recognition. Morrison was always honest in her feelings towards human relationships which she felt prevail beyond the self. Toni Morrison passed away on August 5, aged 88. She is no more with us but she gave us a gift of renewed humanity for creating all encompassing image of this world.

## Legacy

### Glimpses



स्वराज एक वैदिक शब्द है जिसका अर्थ है आत्म संयम और स्वशासन। स्वतंत्रता का अर्थ होता है सभी बंधनों से मुक्ति। इससे भिन्न अर्थ रखता है स्वराज।

-गांधीजी

## प्रेमचन्द की 139वीं जयंती

प्रेमचन्द की 139वीं जयंती के मौके पर 31 जुलाई 2019 को भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली द्वारा ‘प्रेमचन्द जयंती समारोह’ का आयोजन किया गया। समारोह का आयोजन, स्टूडियो ‘A’ सीआईईटी, एनसीईआरटी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110016 में किया गया। भाषा शिक्षा विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. संध्या सिंह की देखरेख में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ।

विभागाध्यक्ष संध्या सिंह ने कहा कि प्रेमचन्द के बिना हिन्दी साहित्य अधूरा है और प्रेमचन्द ऐसा नाम हैं जिससे कोई अपरिचित नहीं है। उन्होंने यह भी बताया कि समय परिवर्तन के कारण आज प्रेमचन्द के साहित्य को नयी दृष्टि से देखने की आवश्यकता है इसलिए जरूरी है कि उनके साहित्य का नया पाठ प्रस्तुत होना चाहिए। प्रेमचन्द की कहानियाँ न केवल किसान-मजदूर के लिहाज से महत्वपूर्ण हैं बल्कि उनके साहित्य में किसान और मजदूर को नायक के रूप में देखा जा सकता है। उनके साहित्य के नायक अपने दृढ़ निश्चय के लिए भी जाने जाते हैं उदाहरणार्थ ‘रंगभूमि’ का नायक सूरदास मिठूआ के प्रश्न पर कहता है कि दुश्मन हजार बार झोपड़ी जला देगा तो हम हजार बार उसे बनाएंगे। इसके बाद उन्होंने कहा कि प्रेमचन्द एक आजादी के परवाने की तरह हैं। ‘सोजे वतन’ का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि प्रेमचन्द ने



आजादी के लिए मर-मिटने को, प्रेम और आजादी से जोड़ दिया है। साथ ही साथ उन्होंने कार्यक्रम की रूपरेखा को स्पष्ट करते हुए कहा कि आज प्रेमचन्द की दो कहानियों – ‘ईदगाह’ और ‘बड़े भाई साहब’ का मंचन प्रस्तुत किया जाएगा। कार्यक्रम की रूपरेखा को स्पष्ट करने के पश्चात् उन्होंने परिषद् डीन प्रो. सरोज यादव को मंच पर आमंत्रित किया। परिषद सचिव मेजर हर्ष कुमार, प्रो. संध्या रानी साहू और अन्य परिषद् साथियों के साथ दीप-प्रज्ज्वलित किया गया। दीप-प्रज्ज्वलन के पश्चात् ‘मुखा-मुखम्’ समूह



‘बड़े भाई साहब’ की नाट्य-प्रस्तुति



‘ईदगाह’ की नाट्य-प्रस्तुति

द्वारा प्रेमचन्द की कहानियाँ ‘ईदगाह’ और ‘बड़े भाई साहब’ का नाट्य प्रस्तुतीकरण हुआ। दोनों नाटकों का निर्देशन सुन्दरलाल छाबड़ा ने किया जो कि महत्वपूर्ण एवं बेजोड़ रहा। सभी पात्रों ने बेहतरीन अभिनय किया। दोनों कहानियाँ बालकों और उनके मनोविज्ञान पर आधारित थी। जहाँ ‘ईदगाह’ नाटक में दर्शकों ने भावनात्मक संवादों द्वारा अपनी आंखों को नम पाया तो वहीं ‘बड़े भाई साहब’ में उनके भाव उत्तरते-चढ़ते रहे। ‘बड़े भाई साहब’ के नाट्य रूपांतरण में छाबड़ा जी द्वारा किया गया प्रयोग भी सफल रहा जिसमें उन्होंने बड़े भाई साहब की भूमिका के लिए चार कलाकारों का चयन किया। इससे संवादों में प्रवाह एवं तारतम्यता बनी रही। कुल मिलाकर कार्यक्रम काफी शानदार रहा।

नाटकों के मंचन के उपरांत डॉ. संध्या रानी साहू ने नाट्यमंडली ‘मुखा-मुखम्’ एवं आगंतुकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। विभागाध्यक्ष प्रो. संध्या सिंह ने धन्यवाद के साथ-साथ आगे भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करते रहने की प्रतिबद्धता जताई।

(डॉ. अमित, जे.पी.एफ. एवं डॉ. रवि रंजन कुमार, जे.पी.एफ., भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी)

## नामवर स्मृति-व्याख्यान

14 मार्च 2019 को एनसीईआरटी के भाषा शिक्षा विभाग ने प्रसिद्ध आलोचक प्रो. नामवर सिंह की स्मृति में एक व्याख्यान का आयोजन किया। अपने उद्बोधन में प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल ने प्रो. नामवर सिंह की पुस्तक ‘कविता के नये प्रतिमान’ को केवल कविता आलोचना ही नहीं अपितु हिंदी आलोचना की सबसे महत्वपूर्ण सैद्धांतिक पुस्तकों में एक पुस्तक मानने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि इस सिद्धांत से जुड़ी दो बातों तत्त्व मीमांसा और अर्थ मीमांसा को इस पुस्तक में देखने से कविता की सही समझ स्पष्ट होती है। उनका कथन था कि रस को अर्थ मीमांसा से जोड़ेंगे तो सही जगह पहुँचेंगे। प्रो. अग्रवाल ने एक और महत्वपूर्ण बात कही कि मूल्य निर्णय जरूरी है और खासकर तब जब यूनिवर्सल टुथ के गायब होने से पोस्ट टुथ (सत्यातीत) का बोलबाला हुआ है। नामवर जी से जुड़े विवादों के सम्बन्ध में उन्होंने एक और बढ़िया कि बात यह कही कि जड़ता और प्रचलित धारणाओं को तोड़ने के लिए ऐसे काम जरूरी हैं जिनसे हलचल हो।



दुनिया में बहुत-सी चीजें हैं करने के लिए। हममें से प्रत्येक को अपने लिए एक कार्य चुन लेना चाहिए। यह चुनाव इस बात पर निर्भर होना चाहिए कि हम सर्वश्रेष्ठ ढंग से क्या कर सकते हैं।

-गांधीजी